

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः ॥

॥ ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः ॥

श्री साईकल्प आध्यात्मिक संस्था
नई दिल्ली

श्री साई शक 42
21 जुलाई 2024

गुरु पौर्णिमा

हमारा दैनंदिन जीवन नौकरी-व्यवसाय और अन्य ऐहिक साधनों में उलझा हुआ है लेकिन आज गुरु पौर्णिमा के दिन हमें हमारे जीवन का अभ्यास करना चाहिए और हमारे जीवन में अंतर्भूत श्री गुरु के ऋणों का आदर करना आज के दिन हमारा कर्तव्य है।

जिस मार्ग पर चलकर हमारे जीवन में स्थित्यंतर होता है वही गुरुमार्ग है। क्या हमारे जीवन में स्थित्यंतर हुआ है? आज हम इस गुरुकार्य का लाभ ले रहे हैं वह किसलिए? प्रापंचिक सवालों को हल करना यह इस कार्य का मूलभूत उद्देश्य नहीं है बल्कि भक्तों के जीवन में स्थित्यंतर करना, उनको मानवरूप में जीवन व्यतीत करने का ज्ञान देकर सत्पुरुष बनाना और उनके माध्यम द्वारा लोककल्याण का कार्य करना यह महान उद्देश्य हमारे गुरुकार्य का है।

वं. दादा जी ने यह महान गुरुमार्ग अनुसरण करने के लिए नहीं बल्कि अनुभव लेने के लिए सिद्ध किया है। हमें किस तरह का अनुभव लेना है? आज अगर हमें पूछा कि हम इस कार्य का लाभ क्यों ले रहे हैं? तो बहुत से लोगों का जवाब होगा कि यहाँ आने से हमें अच्छा लगता है, ॐकार साधना करने से समाधान (संतोष) मिलता है, आरती में आनंद आता है। यह बिल्कुल सही है लेकिन यहाँ आने से क्या हमारे दैनंदिन जीवन में, हमारे आचरण, विचार, उच्चारों में, हमारे आहार, विहार में बदलाव हुआ है? यह बदलाव किस तरह होता है यह समझने का प्रयत्न आज हम करेंगे।

हम सभी लोगों को हमारे जीवन का विकास करना है। आज भक्त एवं सेवक अवस्था से साधक और सिद्ध अवस्था में जाते समय हमारे पंचप्राण कोषों का विकास होता है। इसका अभ्यास कैसे करना है यह वं. दादा जी ने इस तरह से समझाया है।

अन्नमय कोष का विकास – हम मुख से अन्न ग्रहण करते हैं। हमारी आँखें, कान, नाक और त्वचा भी हमें वातावरण से अन्न खिलाते रहते हैं मतलब इनके द्वारा हम वातावरण से अनेक विषय धारण करते रहते हैं। अन्नमय कोष का विकास मतलब मुख द्वारा अन्न ग्रहण करने की आसक्ती, पसंद, नापसंद की जिद नहीं रहना और वातावरण से अच्छे, अनुकूल विषय धारण हो इसलिए ऊपर बताए हुए अन्य अवयवों के विकास पर मन, विचार केंद्रित होना। इसका मतलब सभी प्रकार की साग-सब्जियाँ खुशी से खाना। मुझे यह सब्जी नहीं चाहिए, वह सब्जी पसंद नहीं है इस प्रकार से नहीं बोलना। खाने की सभी वस्तुएँ ईश्वर निर्मित हैं, उनका आदर करना चाहिए। हमें अच्छा देखने, अच्छा सुनने की आदत लगनी चाहिए। जैसे देखिए, पहले ऑफिस में बॉस को गाली देने में मजा आता था, अब वह नहीं आता। जब कोई दूसरे के बारे में बुरा बोलते हैं, चुगली करते हैं तब मन अस्वस्थ होता है। इस तरह की चर्चा में दिलचस्पी

नहीं होती, मन करता है कि वहाँ से निकल जाएं। अगर इस प्रकार का अनुभव आपको आ रहा है मतलब आपके अन्नमय कोष का विकास हो रहा है।

प्राणमय कोष का विकास – इस विकास के साथ हमारे मन में जो बुरी यादें हैं वह निकल जाती हैं और हमारा दृष्टिकोण बदलने लगता है। मतलब पहले हम किसी व्यक्ति के कारण परेशान रहते थे, उसके साथ आए हुए बुरे अनुभवों का हमेशा उच्चार करते थे अब वह नहीं करते। अब उस व्यक्ति के आचरण या उच्चारों से हमें उतनी तकलिफ, परेशानी नहीं होती। हम वह विषय छोड़ देते हैं। उस व्यक्ति के लिए भी अब हम अच्छा विचार और उच्चार करते हैं। हमारे दृष्टिकोण में यह बदलाव आना मतलब प्राणमय कोष के विकास की शुरुआत हो रही है।

मनोमय कोष का विकास – मनोमय कोष के विकास का आरंभ होता है तब हमारे विचारों में स्थिरता तथा निश्चितता आने लगती है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक हमारे मस्तिष्क में अनगिनत विचार आते रहते थे जो अब कम होते जाते हैं। एक काम करते समय हमारे दिमाग में दूसरे काम के विचार होते थे और दूसरा काम करते समय तीसरे काम के विचार होते थे। 'आज कौन से कपड़े पहनें, खाने में क्या बनाएँ, क्या खाएँ, ऑफिस में कैसे जाएँ?' इस तरह लगभग सभी कामों में निर्णय लेते समय दुविधा होती थी। अब विचारों में स्थिरता आई है, निश्चितता आई है मतलब मनोमय कोष के विकास का आरंभ हुआ है।

विज्ञानमय कोष का विकास – विज्ञानमय कोष के विकास के साथ हमें जीवन का बोध होने लगता है। हम विचार करने लगते हैं कि इस जीवन का सदुपयोग करना है, कुछ सत्कार्य करना है। वं. दादा जी के कार्य में हमारे इस जीवन का कुछ समय व्यतीत हो यह विचार धीरे-धीरे दृढ़ होने लगता है और फिर उस प्रकार के प्रयत्नों की शुरुआत होती है।

आनंदमय कोष का विकास – हम आरती में, साधना करते समय कुछ क्षणों के लिए उसमें एकरूप होते हैं तब जिस समाधान या आनंद का हमें अनुभव होता है वही आनंदमय कोष की पहचान है। उस प्रकार का आनंद, उस प्रकार का समाधान जब बढ़ता जाता है और प्रत्येक कार्य में हमें उस प्रकार का अनुभव मिलता है तब आनंदमय कोष का विकास आरंभ होता है।

इस तरह सभी कोषों का धीरे-धीरे विकास होकर वे आनंदमय कोष में विलिन हो जाते हैं और हमारा जीवन उसमें एकरूप हो जाता है वही सच्चिदानंद अवस्था है। इस अवस्था में हमारे बोलने से, हमारे आचरण से अन्य लोगों को उसी प्रकार के आनंद का, समाधान का अनुभव होता है। इसके आगे की अवस्था में हमारे तन्मात्रों का विकास होता है।

आज के इस शुभ दिन पर हम प.पू. बाबा हमारे प्यारे गुरु वं. दादा जी और सभी दिव्य, पूण्य विभूतियों के चरणों में लीन होकर ऐसी प्रार्थना करते हैं कि उनके कृपाशीर्वाद से हमारे जीवन का विकास हो और उसके लिए हमारा आचरण अनुकूल रहे।

॥ शुभं भवतु ॥